Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(सूरः आराफ़ : 172)

अनुवाद : (हे बनी इसराईल!) जो हम ने तुम्हें अता किया है उसे मज़बूती से पकड़ लो और जो इस में है (उसे) याद रखो ताकि तुम संयम वाले हो जाओ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 39

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

02 रबीउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 29 तबूक 1401 हिज्री शम्सी, 29 सितम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तुम में से कोई अपने भाई की बैअ पर बैअ न करे

(2139) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से कोई अपने भाई की बैअ पर बैअ न करे।

तुम में से कोई अपने भाई के पैग़ाम-ए-निकाह पर पैग़ाम न दे

(2140) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है कि शहरी ग़ैर शहरी के लिए बैअ करे, और तुम धोखा देने के लिए आपस में क़ीमत न बढ़ाओ, और कोई शख़्स अपने भाई के सौदे पर सौदा न करे, और अपने भाई के पैग़ाम-ए-निकाह पर पैग़ाम न दे, और कोई औरत अपनी बहन की तलाक़ तलब न करे, इस नीयत से कि उसके बर्तन में जो कुछ है वह ख़ुद उंडेल ले।

क़ीमत बढ़ाने की मनाही

(2142) हज़रत इब्ने उम्र अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने نَجْش अर्थात धोखा दे कर क़ीमत बढ़ाने से मना फ़रमाया है।

नोट : किसी शख़्स का किसी सामान की क़ीमत दूसरे से ज़्यादा देने का इज़हार करना जबकि वास्तव में वह चीज़ ख़रीदना नहीं चाहता नजश कहलाता है।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब बीयू, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की उम्र बता कर शहादत देते थे कि वह मर गया और कभी आने वाले मसीह मौऊद और इसराईली मसीह का हुल्या अलग अलग बता कर समझाते हैं कि वह मर गया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

ख़ुदा तआला का कलाम तीस आयतों में हमारा सहायक है। कभी वह فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ कह कर कभी مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ (आले इमरान :56) يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ (आले इमरान :145) कह कर, उद्देश्य कभी किसी रूप में, कभी किसी सूरत में पुकार पुकार कर कह रहा है कि यही राह सच्ची है जिस पर हम अल्लाह तआला के फज़ल से क़ायम हैं और इसी पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत मसीह को हज़रत यहया के साथ मेराज में देखते हैं। और यह पक्की बात है कि इन दोनों में कोई ख़ास फ़र्क़ जो ज़िंदों और मुर्दों में होना चाहीए, नहीं बताया। कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी उम्र बता कर शहादत देते थे कि वह मर गया और कभी आने वाले मसीह मौऊद और इसराईली मसीह का हुल्या जुदा-जुदा बता कर समझाते हैं कि वह मर गया। यह शहादतें तो हदीस और क़ुरआन की हैं। इसके इलावा तमाम सहाबा की शहादत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात ही पर यह होती है कि सब नबी मर गए। हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की निसबत कहा कि अभी नहीं मरे और तलवार खींच कर खड़े हो जाते हैं, मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो कर यह ख़ुतबा पढ़ते हैं कि मुइ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान:145) अब इस अवसर पर जो एक क़ियामत ही का मैदान था कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस दुनिया से विदा हो चुके हैं और समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा जमा हैं। यहां तक कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर भी रवाना नहीं हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के कहने पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ऊँची आवाज़ में कहते हैं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हो गई और इस पर तर्क देते हैं مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ से। अब अगर

क़ुरआन के शब्द बताते हैं कि वस्तुओं के हलाल और हराम में असल हलाल है और हराम एक प्रतिबंध के तौर पर है कुछ लोगों का ख़्याल है कि हर शैय हराम है सिवाए इसके जिसे ख़ुदा तआला ने जायज़ क़रार दिया हो लेकिन यह दरुस्त नहीं

हर चीज़ इन्सान के लिए जायज़ है सिवाए इसके जिससे क़ुरआन हदीस के अनुसार या इशारतन रोक दिया गया हो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नहल सूरत आयत : 116

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(अनुवाद : उसने तुम पर सिर्फ मुर्दार को और ख़ून को और सिर के गोश्त को और (हर) उस चीज़ को हराम किया है जिस पर अल्लाह (तआला) के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और जो शख़्स (उनमें से किसी चीज़ के खाने पर) मजबूर किया जाए जबकि वह न बाग़ी हो और न हद से बढ़ने वाला हो तो (याद रहे) कि अल्लाह (तआला) निसंदेह बहुत बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

क़ुरआन के शब्द बताते हैं कि इश्याय की हलाल और हराम में असल हलाल है और हुर्मत एक क़ैद के तौर पर है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि हर शैय हराम है सिवाए इसके जिसे ख़ुदा तआला ने जायज़ क़रार दिया हो क्योंकि अल्लाह तआला मालिक है और मालिक की इजाज़त के बग़ैर किसी चीज़ का प्रयोग जायज़ नहीं होता। लेकिन यह दरुस्त नहीं क्योंकि अल्लाह तआला फ़र्मा चुका है कि हमने हर चीज़ इन्सान के लिए पैदा की है और उसके लिए वशीभूत कर दी है। अतः इस आम हुक्म से हर चीज़ इन्सान के लिए जायज़ हो गई सिवाए इसके जिससे क़ुरआन हदीस के अनुसार या इशारतन रोक दिया गया हो।

इस आयत में لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ फ़रमाया उसके विषय में फ़ुक़हा में मतभेद हैं कि लहम् में चर्बी भी शामिल है या नहीं। जहां तक शब्दकोश का सवाल है शहम अर्थात चर्बी को लहम से अलग किस्म का ख़्याल किया जाता है। लेकिन तफ़सीर करने वालों ने कहते हैं कि लहम् के नाम में शहम शामिल है। जबकि तफ़सीर करने वालों ने की दलील ज़ौक़ी है और लुग़त वालों की बात इस मसला में ज़्यादा काबिल-ए-एतेबार है। परन्तु इसके बावजूद मेरे नज़दीक सुअर की शहम अर्थात चर्बी जायज़ नहीं और उसकी दलील मेरे पास यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मुर्दा जानवर की चर्बी हराम है और सूअर की हुर्मत और मुर्दा की हुर्मत एक ही आयत में और एक ही अलफ़ाज़ में वर्णन की गई है। अतः दोनों का हुक्म एक किस्म का समझा जाएगा। लेकिन सूअर की चमड़ी का इस्तेमाल जायज़ होगा क्योंकि वह खाई नहीं जाती।

अहादीस में एक वाक़िया वर्णन किया गया है कि

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-7)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

आपके आचरण के कारण हमारे लिए यह बहुत आसान हो गया कि आप मस्जिद भी बनाएँ और मीनार भी बनाएँ। हमने पड़ोसियों से मिलकर बात की इसका जो परिणाम आज सामने आ रहा है कि आपकी मस्जिद बन चुकी है।

आपकी मस्जिद का मीनार अमन के लिए एक प्रतीक के तौर पर है। यह मस्जिद केवल आप के लिए नहीं है शहर Neufahrn के रहने वालों के लिए भी खुली है। हम इस बात के गवाह हैं कि आप हमारी सोसाइटी में अमन क़ायम करने वाले हैं और हम इकट्ठे हैं

आज इस "मस्जिद महदी" के उद्घाटन के अवसर पर मैं यही कहता हूँ कि एक दूसरे को अपने अंदर जज़ब करें। स्वीकार करें और एक दूसरे के साथ मिलकर जीवन गुज़ारें।

इसके बाद ज़िला Niederbayern की हुकूमत के सदर Mr. Heinz Grunwald ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत को पिछले बीस वर्ष से अधिक अरसा से जानता हूँ। जब मैं राज्य Bayern की गर्वनमैंट में ग़ैर मुल्की लोग के लिए काम करता था। मैं जानता हूँ कि अहमदी मुस्लमानों का आचरण दूसरी तन्ज़ीमों से बिल्कुल विभिन्न है। मैं हमेशा जमाअत को क़दर की निगाह से देखता रहा। इंटीग्रेशन के हवाला से हम अभी मज़ीद काम कर सकते हैं। मैं जानता हूँ कि यह कितना मुश्किल काम है। हम यह नहीं कहते कि आप बिल्कुल हमारी तरह हो जाएं। आपकी जमाअत बिल्कुल Open जमाअत है। आप प्रत्येक के साथ मिलकर जीवन गुज़ारते हैं। आप लोगों के साथ बहुत आसानी से बात हो सकती है। आपके 35 हज़ार से अधिक सदस्य जर्मनी में हैं। मैं आपको आइन्दा के लिए दुआएं देता हूँ कि आप बढे फूलें फलें।

इसके बाद शहरी Freising के लार्ड मेयर Mr. Tobias Eschenbacher ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह मैं इस बात से बहुत ख़ुश हूँ कि आपके पास उपस्थित हूँ Freising शहर की ओर से मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। यह मस्जिद सिर्फ Neufahrn के क्षेत्र की नहीं बल्कि हमारे क्षेत्र की भी है। हमारे क्षेत्र से भी लोग इधर आएँगे।

जो इन्सान एक दूसरे को जानता नहीं और एक दूसरे से भय खाता है। तो आपसी बातचीत से यह मसला हल हो जाता है। आप अपने धर्म को प्रकट करते हैं। अपना अमन का संदेश पहुंचाते हैं और शहर में पौधे लगाते हैं और वक़ारे-ए-अमल करते हैं तो यह सब बातें इस बात को प्रकट करती हैं कि सेवा करना चाहते हैं और मिल-जुल कर रहना चाहते हैं।

मैं नई मस्जिद के हवाला से नेक तमन्नाओं का इज़हार करता हूँ। ख़ुदा का फ़ज़ल आपके साथ हो। ख़ुदा की सलामती आप पर हो। इसके बाद जर्मनी नैशनल पार्लियामेंट के असैंबली Mr. Erich Irlstofer ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा।

इज़्ज़त मॉब ख़लीफतुल मसीह आज इस समारोह में शामिल होने पर मैं आप सब लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ। आपने बड़ा अच्छा स्वागत किया है आपकी पिछले 90 वर्ष से यहां जर्मनी में काम कर रहे हैं। और अब यहां जर्मनी में आप की 225 जमाअतें हैं। मैं पिछले तीस वर्षों से सूबा Bayern में उपस्थित हूँ। आप लोग सूबा Bayern के दिल में दाख़िल हैं। आपने इस सूबा की विशेष टाईयां भी बाँधी हुई हैं। मुझे इस से ख़ुशी हुई है। हमने केवल शब्दों पर ज़िंदा नहीं रहना बल्कि एक दूसरे की मिल्लता को ज़िंदा रखना है। आपकी इस मस्जिद पर हमें गर्व है कि यह हमारे इस सूबा में उपस्थित है। आप यहां अमन से रहें। अमन से जीवन गुज़ारें। मैं आपके लिए ख़ुदा के फ़ज़ल और अमन-ओ-सलामती की दुआ है।

इसके बाद अक़वाम-ए-मुत्तहिदा में शांति के सफ़ीर सम्मानी प्रोफ़ैसर डाक्टर Heiner Bielefed ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए बताया कि मेरे लिए यह बहुत ख़ुशक़िसमती है कि आज मैं यहां इस समारोह में उपस्थित हूँ। UNकी तंज़ीम धार्मिक आज़ादी के मेंबर की हैसियत से मैं बरमला इस बात का प्रकटन करता हूँ कि आज संसार में सबसे ज़्यादा तकलीफ़ें जिन को दी जा रही हैं वह जमाअत अहमदिया के लोग हैं। हमारा कोई भी प्रोग्राम अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के वर्णन के बिना मुकम्मल नहीं होता। पाकिस्तान के अतिरिक्त दूसरे देशों में भी जमाअत अहमदिया पर अत्याचार ढाए जाते हैं। बंगला देश में, इंडोनेशिया में और दूसरे देशों में भी। कज़ाकिस्तान में जमाअत अहमदिया को बहुत मुश्किलात और तकालीफ़ का सामना है।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत बड़ी सफ़लता प्राप्त कर रही है। धार्मिक आज़ादी के लिए जमाअत ने बहुत प्रयास किए हैं। यूरोपीयन पार्लियामेंट में आपने जो सफ़लता प्राप्त की है इस का बड़ा लाभ हुआ है। असाइलम के हवाला से आपने अच्छी काविश की है। और यह सफ़लता इसाईलम सीकरज़ को लाभ देगी कि जिस व्यक्ति को अपना धर्म छुपाना पड़े उसको पनाह दी जानी चाहिए। अतः यह वह जमाअत है जिसने यह काम करके दिखाया है।

उन्होंने कहा यूनाईटेड नेशन के हियूमन राईट्स के क़ानून में यह शक़ उपस्थित है कि अपने धर्म को बदलने की आज्ञा है।

जब सर चौधरी मुहम्मद ज़फ़र उल्लाह ख़ान साहब पाकिस्तान के वज़ीर-ए-ख़ारजा थे उस समय पाकिस्तान में धार्मिक आज़ादी का दौर था। आजकल पाकिस्तान का विरसा डिक्टेटरशिप और चरमपंथी है।

उन्होंने कहा सेरा-लिओन में मैंने जमाअत के स्कूल देखे हैं। जमाअत वहां ग़रीब लोगों की बहुत सेवा कर रही है।

पाकिस्तान में आपका विरोध किया जाता है यह एक ग़म की बात है परन्तु ख़ुशी के अवसर भी आपको मिलते हैं जिस तरह आज आप इस मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं और इसके अतिरिक्त दूसरे अवसर हैं।

उनके ऐडरैस के बाद 6 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भाषण फ़रमाया

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बर्मो का उद्घाटन मस्जिद महदी Neufahrn म्यूनख़, जर्मनी

तशह्हुद और ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

सबसे पहले तो मैं आप सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ जो हमारे इस फंक्शन में पधारे वह फंक्शन जो मस्जिद की Opening का फंक्शन है। जबकि पहले यहां एक सैंटर क़ायम था परन्तु मस्जिद की शक्ल देकर अब उसे नियमित इस शक्ल में लाया गया है जो साधारणता मुस्लमानों की मस्जिदें होती हैं और मस्जिदें का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत के लिए एक जगह इकट्ठा होना है। अल्लाह तआला की इबादत करने वाले हक़ीक़ी लोग वह होते हैं जो न केवल इबादत करने वाले हैं बल्कि ख़ुदा तआला के आदेशों पर अनुकरण करने वाले हैं। और अल्लाह तआला के आदेशों में सबसे बड़ा आदेश यह है कि हक़ीक़ी इबादतगुज़ार वह है जो अपने साथियों की अपने भाईयों की और दूसरे इन्सानों की न केवल सेवा करता है, न केवल उनकी भावनाओं का ख्याल रखता है ताकि हमारे माहौल में, हमारे शहर में, हमारे मुल्क में और संसार में, आपस में मुहब्बत और भाई चारा पैदा हो, और अमन और सलामती की फ़िज़ा क़ायम हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

यहां वर्णन किया गया है कि जमाअत अहमदिया ख़िदमत-ए-ख़लक़ का काम करती है। और यह ख़िदमत-ए-ख़लक़ का काम इस तरह है कि हमारे नौजवान जिनको खुद्दामुल अहमदिया कहा जाता है वे वर्ष के शुरू में शहरों की सफ़ाई करते हैं ताकि जब नया वर्ष शुरू हो तो प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक शहरी जो इस मुल्क में है या

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

याद रहे अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ फ़ौज के अधिक होने के आधार पर हमें फ़तह-ओ-नुसरत नहीं अता की,

हमारी तो हालत यह थी कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद करते और हमारे पास सिर्फ दो घोड़े होते और ऊंट पर भी बारी-बारी सवारी करते,

अहद के दिन हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे और हमारे पास सिर्फ एक ही घोड़ा था जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सवार थे लेकिन इस के बावजूद अल्लाह तआला हमें हमारे दुश्मन पर ग़लबा अता फ़रमाता और हमारी मदद करता था

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाबरकत दौर में सल्तनत-ए-रुम के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अगस्त 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के शाम की तरफ़ भेजे हुए लश्करों का वर्णन हो रहा था जो दुश्मन को अतिक्रमण से रोकने के लिए भेजे गए थे। तीन का वर्णन पिछले ख़ुतबा में हो चुका है। चौथा लश्कर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु का था। इसके बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक लश्कर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में शाम की तरफ़ रवाना किया था। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु शाम जाने से पूर्व क़ज़ाह के एक हिस्सा के सदक़ात की तहसील के लिए निर्धरित थे। जबकि क़ज़ाह के दूसरे आधे हिस्सा की सदक़ात की तहसील के लिए हज़रत वलीद बिन उक़बा अमीर निर्धरित किए गए थे। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शाम की जानिब मुख़्तलिफ़ लश्कर रवाना फ़रमाने का इरादा फ़रमाया तो उनकी ख़ाहिश थी कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को शाम की तरफ़ भेजें लेकिन उनके कारनामों की वजह से, हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के कारनामों की वजह से जो उन्होंने फ़िल्ला इर्तिदाद को ख़त्म करने के लिए अंजाम दिए थे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें यह इख़्तेयार दिया कि ख़ाह वह क़ज़ाह में ही मुक़ीम रहें या शाम जा कर वहां के मुस्लमानों की तक़वियत का बायस बनें।

(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 4 हिस्सा 7 पृष्ठ 3 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (उद्धरित हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 340 मुद्रित बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा कि हे अबू अबदुल्लाह मैं तुमको एक ऐसे काम में व्यस्त करना चाहता हूँ जो तुम्हारी दुनिया और आख़रत दोनों के लिए बेहतरीन है सिवाए इसके कि तुम्हें वह काम ज़्यादा पसंद हो जो तुम अंजाम दे रहे हो।

इसके जवाब में हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह लिखा कि मैं इस्लाम के तीरों में से एक तीर हूँ और अल्लाह के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ही एक ऐसे शख़्स हैं जो इन तीरों को चलाने और जमा करने वाले हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु देखें कि उनमें से जो तीर निहायत सख़्त, ज़्यादा ख़ौफ़नाक और बेहतरीन हो उसे उस तरफ़ चला दीजीए जिस तरफ़ आप रज़ियल्लाहु अन्हु को कोई ख़तरा नज़र आए।

(तारीख़ तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 332 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 ई.)

अर्थात कि मैं तो हर किस्म के ख़तरे में जाने के लिए हर तरह तैयार हूँ।

जब हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना आए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें हुक्म दिया कि मदीना से बाहर जा कर ख़ेमा-ज़न हो जाएं ताकि लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जमा हों। क़ुरैश के शरीफ़ों में से बहुत से लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ शामिल हुए। जब फ़ैसला हो गया कि शाम की तरफ़ जाना है तो फिर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना बुलाया गया। आप वहां आए और फिर यहां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप को अपने साथ लश्कर तैयार करने के लिए फ़रमाया कि मदीना के बाहर ख़ेमा ज़न हो जाएं ताकि लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आएं। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रवाना होने का इरादा फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु को रुख़स्त करने निकले फ़रमाया : हे अम्र तुम राय और तजुर्बा के मालिक हो और जंगी विवेक रखते हो। तुम अपनी क़ौम के अशराफ़ और मुस्लिम सोलाहा के साथ जा रहे हो और अपने भाईयों से मिलोगे। इसलिए उनकी ख़ैर ख़्वाही में कोताही नहीं करना और उनसे अच्छे मश्वरे को न रोकना क्योंकि तुम्हारी राय जंग में काबिल-ए-तारीफ़ और अंजाम-कार बाबरकत हो सकती है। अगर कोई मश्वरा दे तो उनसे अच्छे मश्वरे को न रोकना, अगर तुम्हारे पास कोई तजवीज़ है तो इस को बेशक इस्तमाल करना। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कितना बेहतर है मेरे लिए कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु के गुमान को सच्च कर दिखाऊँ और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की राय मेरे बारे में ग़लती न करे। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लश्कर के साथ रवाना हो गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज छः सात हज़ार के दरमयान थी और उनकी मंज़िल-ए-मक़सूद फ़लस्तीन थी।

हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक हज़ार मुजाहेदीन पर मुश्तमिल दस्ता तैयार किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ियादत में रुम की जानिब पेशक़दमी के लिए रवाना किया। यह दस्ता रोमियों से जा टकराया और दुश्मन की क़ुव्वत को पारापारा करके उन पर फ़तह हासिल की और कुछ क़ैदीयों के साथ वापस हुआ।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन क़ैदियों से पूछगिछ की जिससे पता चला कि रूमी फ़ौज रुवैस की क़ियादत में मुस्लमानों पर अचानक हमला करने की तैयारी में है। इन मालूमात की रोशनी में हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी फ़ौज को मुनज़्ज़म किया। जब रूमी हमला-आवर हुए तो मुस्लमान उनका हमला रोकने में कामयाब हो गए और रूमी फ़ौज को वापस होने पर मजबूर कर दिया और इस के बाद उन पर जवाबी हमला करके दुश्मन की क़ुव्वत को तबाह कर दिया और राह़-ए-फ़रार इख़्तेयार करने और मैदान छोड़ने पर मजबूर कर दिया। इस्लामी फ़ौज ने उनका पीछा किया और रुम के हज़ारों फ़ौजी मारे गए और इसी पर यह मार्का ख़त्म हो गया।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद अलसलाबी, अनुवादक, पृष्ठ 448-449 अल् फ़ुकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

इन लश्करों को रवाना करके हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इतमीनान का सांस लिया। उन्हें कामिल उम्मीद थी कि अल्लाह इन फ़ौजों के द्वारा से मुस्लमानों को रोमियों पर ग़लबा अता फ़रमाएगा। वजह यह थी कि उनमें एक हज़ार से ज़्यादा मुहाजिर और अंसार सहाबा शामिल थे जिन्हों ने हर अवसर पर इंतेहाई वफ़ादारी का सबूत दिया था और इब्तदाए इस्लाम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कांधे से कांधा मिलाए हुए लड़ाईयों में हिस्सा लिया था। उनमें वे अहले बदर भी शामिल थे जिनके मुताल्लिक़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अर्थात आप

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने रब के हुज़ूर यह इल्तिजा की थी कि अल्लाह! अगर आज तू ने इस छोटी सी जमाअत को हलाक कर दिया तो आइन्दा फिर कभी ज़मीन पर तेरी प्रसतिश नहीं की जाएगी।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति, पृष्ठ 322 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

फिर लिखा है कि शाह-ए-रुम हरक़्ल इन दिनों फ़लस्तीन में था। जब उसे मुस्लमानों की तैयारियों की ख़बरें मिली तो उसने इलाक़े के सरदारों को जमा किया और उनके सामने जोशीली तक़रीरें करके उन्हें मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने पर आमादा किया। उसने मुस्लमानों के मुताल्लिक़ कहा कि यह भूके नंगे, ग़ैर मुहज़्ज़ब लोग सहराए अरब से निकल कर तुम पर हमला-आवर होना चाहते हैं। तुम उन्हें ऐसा मुंहतोड़ जवाब दो कि फिर यह कभी तुम्हारी तरफ़ देखने की भी जुर्रत न कर सकें। सामान-ए-हर्ब और फ़ौजियों के ज़रीया से तुम्हारी पूरी मदद की जाएगी। जो उमरा तुम पर निर्धारित किए गए हैं तुम दिल-ओ-जान से उनकी इताअत करो। फ़तह तुम्हारी होगी। हरक़्ल ने वहां के लोगों को यह तक़रीर की अरबों के ख़िलाफ़ उभारने में, मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उभारने में। फ़लस्तीन के लोगों को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ तैयार कर के हरक़्ल दमिशक़ आया। वहां से हुम्मस और अनताकिया पहुंचा और फ़लस्तीन की तरह इन इलाक़ों में भी उसने जोशीली तक़रीरें कर के वहां के लोगों को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने पर तैयार किया। ख़ुद अनताकिया को हेडक्वार्टर बना कर मुस्लमानों से मुक़ाबले की तैयारियां करने लगा।

(हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन पृष्ठ 347 अनुवाद शेख़ मुहम्मद अहमद पानी पत्ती, इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

रुम की शाम में दो अफ़्वाज थीं। एक फ़लस्तीन में और दूसरी अनताकिया में और इन दोनों अफ़्वाज ने निम्नलिखित स्थानों पर अपने मराकज़ बना रखे थे। नंबर एक अनताकिया यह रूमी सलतनत के दौर में शाम का दारुल सल्तनत था। दूसरा किनस्रीन यह शाम की सरहद है जो शुमाल मग़रिब में फ़ारस के मुक़ाबिल पड़ती है। तीसरा हिमस यह शाम की सरहद है जो शुमाल मशरिक़ में फ़ारस के मुक़ाबिल पड़ती है। चौथा। उम्मान बिलका का सदर मुक़ाम यहां मज़बूत और महफ़ूज़ क़िला था। पांचवां अजनादीन यह फ़लस्तीन के जुनूब में रुम का अस्करी मर्कज़ था जो बिलाद-ए-अरब की मशरिक़ी और मग़रबी सरहदों और हदूद मिस्र से मिलता था। छटा केसरिया यह फ़लस्तीन के शुमाल में हेफ़ा से तेराह किलो मीटर पर वाक़्य है और उसके खन्डर अभी तक बाक़ी हैं। रूमी हाईकमान का मर्कज़ अनताकिया या हुम्मस था।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद अलसलाबी, अनुवादक पृष्ठ 450 फ़ुरकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

एक रिवायत में यह भी वर्णन मिलता है कि जब हरक़्ल को इस्लामी लश्करों की आमद की ख़बर मिली तो उसने पहले अपनी क़ौम को जंग से बाज़ रहने का मश्वरा दिया और कहा कि मेरी राय है कि तुम मुस्लमानों से सुलह कर लो। ख़ुदा की क़सम अगर उनसे शाम की आधी पैदावार पर सुलह करोगे और तुम्हारे पास आधी पैदावार और रुम का इलाक़ा रहा तो वह तुम्हारे लिए इससे बेहतर है कि वह शाम के तमाम इलाक़े और रुम के आधे इलाक़े पर क़ाबिज़ हो जाएं परन्तु अहल-ए-रुम उठकर चले गए और उन्होंने उसकी बात नहीं मानी। इसलिए वेह उन्हें इकट्ठा कर के हुम्मस ले गया और वहां उसने फ़ौजियों और लश्करों को तैयार करना शुरू किया। हुम्मस के बाद हरक़्ल अनताकिया गया। चूँकि उसके पास फ़ौज बहुत ज़्यादा थी इसलिए उसने यह इरादा किया कि मुस्लमानों के हर लश्कर के मुक़ाबले में अलग-अलग लश्कर भेजे ताकि मुस्लमानों के लश्कर के हर हिस्सा को अपने मद्द-ए-मुक़ाबिल के ज़रीया कमज़ोर कर दे। इसलिए उसने अपने भाई तज़ारिक़ को नव्वे हज़ार फ़ौज देकर हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले में भेजा और जरजह बिन तूज़र को हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाबले के लिए भेजा। इसी तरह के केकार बिन नसतूस को साठ हज़ार फ़ौज देकर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ रवाना किया और हज़रत शुरहबील हसन रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाबले के लिए दुराक़िस को भेजा।

(अल् कामिल फिल् तारीख़, भाग 2, पृष्ठ 255 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ हैकल, पृष्ठ 347)

हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु जब जाबिया के क़रीब थे तो उनके पास एक आदमी ख़बर लेकर आया कि हिराक्लंताकिया में है और उसने तुम्हारे मुक़ाबले के लिए इतना बड़ा लश्कर तैयार किया है कि इस से क़बल ऐसा लश्कर उसके पूर्वजों में से भी किसी ने तुमसे पहली क़ौमों के मुक़ाबले के लिए तैयार नहीं किया था।

इस पर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा कि मुझे यह इत्तिला मिली है कि शाह रुम हरक़्ल शाम की एक बस्ती जिसे अन्ताकिया कहते हैं वहां आकर क़ियाम पज़ीर हुआ है और अपनी सलतनत के लोगों की तरफ़ आदमी भेजे कि उन्हें जमा करके लाएं। इसलिए लोग हर मुश्किल और आसान रास्तों से होते हुए हरक़्ल की तरफ़ आए। इसलिए मैंने मुनासिब समझा कि आप को इसकी इत्तिला भेज दूं ताकि इस बारे में आप फ़ैसला कर सकें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ उत्तर लिखा कि तुम्हारा ख़त मुझे मिला मैंने उसको समझा जो तुमने शाह-ए-रुम हरक़्ल के मुताल्लिक़ तहरीर किया है। फिर फ़रमाया कि अनताकिया में इसका क़ियाम करना उसकी और इस के साथियों की शिकस्त और इसमें अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी और मुस्लमानों की फ़तह है, घबराने की कोई बात नहीं। तुमने जो हरक़्ल के अपने देश के लोगों को जमा करने और कसीर संख्या में लोगों के जमा होने से विषय में तहरीर किया है तो यह हम और तुम पहले से जानते हैं कि वे ऐसा करेंगे क्योंकि कोई क़ौम बग़ैर क़िताल के अपने बादशाह को न छोड़ सकती है और न अपने देश से निकल सकती है। फिर आपने लिखा कि अलहमदु लिल्लाह मुझे यह मालूम है कि उनसे लड़ने वाले बहुत से मुस्लमान मौत से इसी क़द्र मोहब्बत रखते हैं जिस क़दर दुश्मन ज़िंदगी से मुहब्बत रखता है और अपने क़िताल में अल्लाह से अज्र अज़ीम की उम्मीद रखते हैं और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिए इस से ज़्यादा मुहब्बत रखते हैं जितनी उन्हें कुँवारी औरतों और क़ीमती माल से होती है। उनमें से एक मुस्लमान जंग के वक़्त हज़ार मुशरेकीन से बेहतर है। तुम अपनी फ़ौज के साथ उनसे टकराओ और जो मुस्लमान तुम से ग़ायब हैं उसकी वजह से परेशान न हो। निसंदेह अल्लाह जिसका वर्णन बहुत बुलंद है वह तुम्हारे साथ है और उसके साथ-साथ मैं तुम्हारी मदद के लिए लोगों को भेज रहा हूँ यानी और फ़ौज भी भेज रहा हूँ जो तुम्हारे लिए काफ़ी होगी और मज़ीद की इन शा अल्लाह ख़ाहिश न रहेगी। वस्सलाम।

(तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 212 से 213 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

इसी तरह हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो का भी ख़त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को मिला। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब देते हुए तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारा ख़त मुझे मौसूल हुआ जिसमें तुमने रोमियों के फ़ौज इकट्ठी करने का वर्णन किया है तो याद रहे अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ कसरत फ़ौज की बिना पर हमें फ़तह-और नुसरत नहीं अता की। हमारी तो हालत यह थी कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद करते और हमारे पास केवल दो घोड़े होते और ऊंट पर भी बारी-बारी सवारी करते। अहद के दिन हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे और हमारे पास सिर्फ एक ही घोड़ा था जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सवार थे लेकिन इस के बावजूद अल्लाह तआला हमें हमारे दुश्मन पर ग़लबा अता फ़रमाता और हमारी मदद करता था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अम्र याद रखो अल्लाह का सबसे बड़ा आज्ञाकारी वह है जो मासियत से सबसे ज़्यादा बुग़ज़ रखे। ख़ुद भी अल्लाह की इताअत करो और अपने साथियों को भी इताअत-ए-इलाही का हुक्म दो।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी, अनुवादक पृष्ठ 452-453 अलफ़रकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़यान रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में वहां के हालात लिखते हुए मदद तलब की जिसके जवाब में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि जब उनसे तुम्हारा मुक़ाबला हो तो अपने साथियों को लेकर उन पर टूट पड़ो और उनसे क़िताल करो, अल्लाह तआला तुम्हें रुस्वा नहीं करेगा। अल्लाह तआला ने हमें ख़बर दी है कि अल्लाह के हुक्म से छोटा गिरोह बड़े गिरोह पर ग़ालिब आ जाता है और उसके बावजूद मैं तुम्हारी मदद के लिए मुजाहेदीन पर मुजाहेदीन भेज रहा हूँ यहां तक कि तुम्हारे लिए काफ़ी हो जाऐंगे और मज़ीद की हाजत न महसूस करोगे। इन शा अल्लाह। वस्सलाम। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस्तख़त फ़रमाए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ख़त हज़रत अबुल्लाह बिन क़ुरत रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ ले जाने के लिए दिया और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो आप रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त लेकर रवाना हुए यहां तक कि हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचे और ययह ख़त मुस्लमानों के सामने पढ़ा जिससे मुस्लमान बहुत ख़ुश हुए।

(उद्धरित अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 213 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाशिम बिन उत्बा को बुलाया और उनसे फ़रमाया हे हाशिम निसंदेह तुम्हारी सआदतमंदी और नेक-बख़्ती है कि तुम उन लोगों में से हो जिस से उम्मत अपने दुश्मन मुशरेकीन के ख़िलाफ़ जिहाद में मदद हासिल कर रहे हैं और जिसकी ख़ैर ख़्वाही, सेहत-ए-राय, पाकदामनी और जंगी सलाहियत पर हाकिम को एतेमाद और भरोसा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें अर्थात हाशिम को फ़रमाया कि मुस्लमानों ने मुझे ख़त लिख कर अपने दुश्मन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में मदद तलब की है तो तुम अपने साथियों को लेकर उनके पास जाओ। मैं लोगों को तुम्हारे साथ जाने पर तैयार कर रहा हूँ। तुम यहां से रवाना हो जाओ यहां तक कि अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो से जा मिलो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में खड़े हुए और अल्लाह की हमद-ओ-सना वर्णन की। और फ़रमाया। अम्मा बाद! निसंदेह तुम्हारे मुस्लमान भाईयों में से कुछ ख़ैरो आफ़ियत से हैं। कुछ ज़ख़मी हैं जिनका दिफ़ा किया जा रहा है और उनकी देख-भाल की जा रही है। अल्लाह तआला ने दुश्मन के दिलों में उनका रोब बिठा दिया है। उन्होंने अपने क़िलों में पनाह लेकर उनके दरवाज़े बंद कर लिए हैं।

मुस्लमानों की तरफ़ से संदेश देने वाला यह ख़बर लाए हैं कि शाह-ए-रुम हरक़्ल ने उनके सामने से भाग कर शाम के किनारे एक बस्ती में पनाह ले ली है। उन्होंने हमें यह ख़बर भेजी है कि हरक़्ल ने इस जगह से बहुत बड़ी फ़ौज मुस्लमानों से मुक़ाबले के लिए रवाना की है। मेरा इरादा है कि तुम्हारे मुस्लमान भाईयों की मदद के लिए तुम्हारी फ़ौज रवाना करूँ। अल्लाह तआला उनके ज़रीया से उनकी पुश्त मज़बूत करेगा अर्थात इस फ़ौज के ज़रीया से मुस्लमानों की पुश्त मज़बूत करेगा और दुश्मन को ज़लील करेगा और उनके दिलों में इसका रोब डाल देगा। अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाए। हाशिम बिन उत्बा के साथ तैयार हो जाओ और अल्लाह से अज्र-ओ-ख़ैर की उम्मीद रखो।अगर तुम कामयाब हुए तो फ़तह-ओ-ग़नीमत हासिल होगी और अगर हलाक हुए तो शहादत-ओ-करामत हासिल होगी।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर आए और लोग हाशिम बिन उतबा के पास जमा होने लगे यहां तक कि उनकी संख्या बढ़ गई। जब एक हज़ार हो गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें कूच करने का हुक्म दे दिया। हाशिम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को सलाम किया और अल्विदा कहा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया हाशिम! हम बड़े बूढ़े की राय, मश्वरा और हुस्न-ए-तद्बीर से इस्तेफ़ादा किया करते थे और नौजवानों के सब्र, क़ुव्वत और शुजाअत पर भरोसा करते थे और अल्लाह तआला ने तुम्हारे अन्दर समस्त विशेषताएँ जमा कर दी हैं। तुम अभी छोटी आयु के हो और ख़ैर की तरफ़ बढ़ने वाले हो।

जब दुश्मन से मुढ भीड़ हो तो डट कर मुक़ाबला करना और सब्र का प्रदर्शन करना और याद रखो अल्लाह की राह में जो क़दम भी तुम उठाओगे, जो ख़र्च भी करोगे और जो प्यास थकावट और भूख तुम्हें लाहक़ होगी इसके बदले अल्लाह तआला तुम्हारे नामा-ए- आमाल में अमल-ए-सालेह लिखेगा। अल्लाह तआला एहसान करने वालों के अज्र को ज़ाए नहीं करता।

हाशिम ने अर्ज़ किया कि अगर अल्लाह ने मेरे साथ ख़ैर ख़्वाही चाही तो मुझे ऐसा ही करेगा और मैं ऐसा ही करूँगा। क़ुव्वत-ओ-ताक़त अल्लाह ही अता करने वाला है और मैं उम्मीद रखता हूँ कि अगर मैं मारा न गया तो मैं उनसे लड़ूँगा। फिर उनसे लड़ूँगा। फिर उनसे लड़ूँगा। फिर कहा कि मुझे उम्मीद है कि अगर मैं क़तल न किया गया तो मैं उनसे बार-बार लड़ाई करूँगा या उन्होंने यह कहा कि मेरी ख़ाहिश होगी कि मैं क़तल किया जाऊं और बार-बार क़तल किया जाऊं। ये दो रिवायतें हैं। फिर उनसे उनके चचा हज़रत साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि भतीजे! तुम जो भी नेज़े चलाओं और जो ज़रब भी लगाओ इस से मक़सूद अल्लाह की रज़ा हो और जान लो कि तुम बहुत जल्द दुनिया से रुख़स्त होने वाले हो और अनक़रीब अल्लाह की तरफ़ लोटने वाले हो और दुनिया से लेकर आख़िरत तक तुम्हारे साथ सच्चाई का क़दम होगा जो तुमने उठाया होगा या अमल-ए-सालेह होगा जो तुमने किया है।

हाशिम ने कहा : चचा जान आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी तरफ़ से इस बारे में बिल्कुल बे-ख़ौफ़ रहें। अगर मेरा क़ियाम-ओ-सफ़र, सुबह शाम की नक़ल-ओ-हरकत, कोशिश करना और लश्कर कुशी करना और अपने नेज़े से ज़ख़म लगाना और अपनी तलवार से ज़रब लगाना लोगों को दिखाने के लिए हो तो फिर मैं घाठा उठाने वालों में से हो जाऊँगा। अर्थात कि मेरा हर अमल तो अल्लाह की ख़ातिर होगा लोगों के लिए नहीं। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से रवाना हुए और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो का रास्ता इख़्तेयार किया यहां तक कि उनके पास आगए। उनके पहुंचने से मुस्लमान ख़ुश हो गए और एक दूसरे को उनकी आमद की ख़ुशख़बरी सुनाते।

हज़रत सईद बिन आमिर बिन हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हो को ये ख़बर पहुंची कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें शाम के जिहाद पर भेजना चाहते हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु यह एक और लश्कर तैयार कर रहे थे। हज़रत सईद का ख़्याल था कि यह उनकी सरकर्दगी में जाएगा। बहरहाल उनको यह ख़बर पहुंची लेकिन जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ देरी कर दी और कुछ दिन उनसे वर्णन करने से रुके रहे तो हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और अर्ज़ किया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु! अल्लाह की क़सम मुझे यह ख़बर मिली थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे रोमियों की जानिब भेजने का इरादा रखते हैं परन्तु फिर मैं ने देखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ामोशी इख़्तेयार कर ली। मैं नहीं जानता कि मेरे बारे में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में क्या ख़्याल आया है अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे इलावा किसी और को अमीर बना कर भेजना चाहते हैं तो मुझे उसके साथ भेज दें। मेरे लिए इस से बढ़कर कोई ख़ुशी वाली बात नहीं होगी। और अगर आप किसी को भी भेजना नहीं चाहते तो मैं जिहाद का शौक़ रखता हूँ आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे इजाज़त दें कि मैं मुस्लमानों से जा मिलूं। अल्लाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर रहम फ़रमाए। मेरे सामने यह वर्णन किया गया है कि रोमियों ने बहुत बड़ा लश्कर जमा किया है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे सईद बिन आमिर! तमाम रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला तुम पर रहम करे। जहां तक मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा शुमार तवाज़ो इख़्तेयार करने वालों, सिला रहमी करने वालों, सुबह के वक़्त तहज्जुद अदा करने वालों और बकसरत अल्लाह का वर्णन करने वालों में से होता है।

तो हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि अल्लाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर रहम करे अल्लाह के मुझ पर इस से बढ़कर एहसानात हैं। उसी का फ़ज़ल और एहसान है।ख़ुदा की कसम जहां तक मैं आपको जानता हूँ आप हक़ को खुल कर वर्णन करने वाले, इन्साफ़ के साथ मज़बूती से खड़े होने वाले, मोमिनों के साथ बहुत रहम करने वाले, काफ़िरों के मुक़ाबले में इंतेहाई सख़्त हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु अदल के साथ फ़ैसला करते हैं और माल की तक़सीम के वक़्त किसी को तर्जीह नहीं देते। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : बस करो हे सईद बस करो। अल्लाह आप पर रहम करे। जाओ

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

और जंग पर जाने की तैयारी करो। मैं शाम में मौजूद मुस्लमानों की तरफ़ एक लश्कर भेजने वाला हूँ और इस पर तुम्हें अमीर निर्धारित करता हूँ। फिर आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि वह लोगों में ऐलान करें। उन्होंने ऐलान किया मुसलमानो! हज़रत सईद बिन आमिर बिन हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ शाम की मुहिम के लिए तैयार हो जाओ। कुछ दिनों में उनके साथ सात सौ अफ़राद तैयार हो गए और जब हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कूच करने का इरादा किया तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा अगर अल्लाह तआला की ख़ातिर आज़ाद किया था ताकि मैं अपने नफ़्स का मालिक रहूं और नफ़ा बख़्श चीज़ के सिलसिला में नक़ल-ओ-हरकत करूँ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने रब की राह में जिहाद करूँ। मुझे बैठे रहने से जिहाद ज़्यादा महबूब है।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : अल्लाह गवाह है कि मैंने तुम्हें उसी की ख़ातिर आज़ाद किया था और मैं तुम से इसके बदला में किसी किस्म की जज़ा और शुक्रिया का तलबगार नहीं हूँ। यह ज़मीन बहुत बड़ी है अतः जिस रस्ते को तुम पसंद करो उस पर चलो। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया। हे सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु शायद आपने मेरी इस बात का बुरा मनाया है और आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझ से नाराज़ हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : नहींख़ुदा की कसम मैं इस बात से नाराज़ नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी ख़ाहिश की वजह से अपनी ख़ाहिश को तर्क मत करो क्योंकि तुम्हारी ख़ाहिश तुम्हें अल्लाह की इताअत की तरफ़ बुलाती है। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया अगर आप चाहते हैं तो मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रुक जाता हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : अगर तुम्हारी ख़ाहिश जिहाद करने की है तो मैं तुम्हें ठहरने का हुक्म कभी नहीं दूँगा। मैं तुम्हें सिर्फ अज़ान के लिए चाहता हूँ और हे बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे तुम्हारी जुदाई से वहशत महसूस होती है लेकिन ऐसी जुदाई ज़रूरी है जिसके बाद क़ियामत तक मुलाक़ात नहीं होगी। हे बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो तुम अमल-ए-सालिह करते रहना। यह दुनिया से तुम्हारा ज़ाद-ए-राह हो, अमल-ए-सालेह और जब तक तुम ज़िंदा रहोगे उसकी वजह से अल्लाह तुम्हारा वर्णन बाक़ी रखेगा और जब वफ़ात पाओगे तो इसका बेहतरीन सवाब अता करेगा। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया : अल्लाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु को उस दोस्त और भाई की तरफ़ से उत्तम प्रतिफल अता करे।

ख़ुदा की कसम! आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो हमें अल्लाह की इताअत पर सब्र और हक़ और अमले सालिह पर मुदावमत का हुक्म फ़रमाया है तो यह कोई नई बात नहीं है और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद किसी के लिए अज़ान नहीं देना चाहता।

फिर हज़रत सईद बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो भी रवाना हो गए।

(1 2...الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسول الله पृष्ठ 130 से 132 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

यह भी दरख़ास्त की कि अगर केवल अज़ान के लिए रोकना है तो मेरी ख़ाहिश यही है कि मैं अज़ान न दूं क्योंकि दिल नहीं मानता कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद किसी के लिए अज़ान दूं। इसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास और लोग जमा हो गए। आपने हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो को उन पर अमीर बनाया और उन्हें उनके भाई हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हो से मिल जाने का हुक्म दिया। हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो रवाना हो कर हज़रत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हो से जा मिले। जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हो का गुज़र हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से हुआ तो उनकी फ़ौज का बक़ीया हिस्सा भी हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हो गया।

(तारीख़ तिबरी, भाग 3, पृष्ठ 333 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012)

फिर हमज़ा बिन मालिक हमज़ानी एक लश्कर लेकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इस लश्कर की संख्या एक हज़ार के क़रीब या इससे भी ज़्यादा थी। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी संख्या और तैयारी देखी तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु बहत ख़ुश हुए और फ़रमाया मुस्लमानों पर अल्लाह के इस एहसान पर तमाम तारीफ़ें उसीके लिए हैं। अल्लाह हमेशा उन लोगों के ज़रीया मुस्लमानों की मदद करके उनकी राहत के सामान मुहय्या करता रहता है। इसके ज़रीया मुस्लमानों की पुश्त को मज़बूत करता है और उनके दुश्मन की पुश्त को तोड़ कर रख देता है।

फिर हमज़ा ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इलावा मुझ पर कोई और भी अमीर होगा? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ हमने तीन अमीर निर्धारित किए हैं तुम उनमें से जिसके साथ चाहो जा मिलो। फिर जब हमज़ा मुस्लमानों से मिले और उनसे दरयाफ़त किया कि इन उमरा में से कौन सा अमीर सबसे अफ़ज़ल और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत के लिहाज़ से सबसे बेहतरीन है तो उन्हें बताया गया कि हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो। इसलिए वह उनसे जा मिले। यह भी उन लोगों का इशक़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इज़हार था कि जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब रहा मैं उसके साथ रहूं।

जिहादी वफ़ूद के आने का सिलसिला मदीना में जारी रहा और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें मुहिम्मात पर रवाना करते रहते। दूसरी तरफ़ हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो बराबर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखते रहे। रूमी और उनके हाशिया नशीन क़बायल मुस्लमानों से लड़ने के लिए भारी संख्या में इकट्ठे हो रहे हैं इसलिए मुझे इरशाद फ़रमाएं कि इस अवसर पर क्या करना चाहिए।

(الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسول الله... भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 133 से 136 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो के पै दर पै ख़ुतूत के नतीजा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलेद रज़ियल्लाहु अन्हो को शाम भेजने का फ़ैसला किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर ख़ालिद बिन वलेद रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया रोमियों को उनके शैतानी वस्वसे भुला दूँगा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त इराक़ में थे जिस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को शाम जाने और वहां इस्लामी अफ़्वाज की इमारत सँभालने का हुक्म दिया तो हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा इसके बाद मैंने शाम में दुश्मनों से जंग की क़ियादत ख़ालिद को सौंप दी है। तुम उसकी मुख़ालेफ़त न करना। उनकी बात सुनना और उनके हुक्म की तामील करना। मैंने उनको तुम्हारे ऊपर इसलिए निर्धारित नहीं किया कि तुम मेरे नज़दीक उनसे अफ़ज़ल नहीं हो लेकिन मेरे ख़्याल में जो जंगी महारत उन्हें हासिल है तुम्हें नहीं। अल्लाह तआला हमारे और तुम्हारे लिए ख़ैर का ही इरादा करे। वस्सलाम।

(الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسول الله... भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 148 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)(तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 220)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की इराक़ से शाम की तरफ़ रवानगी के बारे में लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को मिला तो इस की मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं कि वह आठ सौ या छः सौ या पाँच सौ या हज़ारों में भी हैं, नौ हज़ार तक भी है या छः हज़ार की भी। यह जमईयत लेकर शाम की तरफ़ रवाना हो गए। कुछ रिवायतों में सैंकड़ों में बात आती है, कुछ मैं हज़ारों में। बहरहाल वह शाम की तरफ़ रवाना हो गए। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो कुराकिर स्थान पर पहुंचे तो आपने वहां के लोगों पर हमला किया और फिर वहां से सहरा को पार करते हुए इंतेहाई पुरसावबत सफ़र तै करने के बाद अपना सियाह-रंग का झंडा लहराते हुए दमिशक़ के क़रीब सानिय्या तुलइक़ाब पहुंचे।

इसके बारे मैं, इस झंडे के बारे में लिखा है कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा था जिसका नाम उकाब था। इस झंडे की वजह से इस घाटी का नाम भी सानिय्या तुलइक़ाब पड़ गया।

(माख़ूज़ कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 256-258 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)(हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानी पत्ती, पृष्ठ 350 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

इसके बाद दमिशक़ के मशरेक़ी दरवाज़े से एक मील के फ़ासले पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक जगह क़ियाम फ़रमाया। कुछ रिवायात में वर्णित है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो आप को यहीं मिले थे और दुश्मन का घेराव असल में इसी रोज़ शुरू हुआ था। कुछ रिवायात में यह भी वर्णित है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ के सामने ज़्यादा दिन तक क़ियाम न किया बल्कि आगे बढ़कर कनाते बुसरा पहुंचे। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो मस्लमानों के साथ बुसरा पहुंचे तो तमाम लश्कर यहां जमा हो गए और सबने

यहां की जंग में उन्हें अपना अमीर बना लिया। उन्होंने शहर का घेराव किया। कुछ कहते हैं कि इस जंग के क़ायद हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हो थे क्योंकि यह दमिशक़ की अमलदारी में था जिसके वह वाली और क़ायद थे। यहां के रहने वालों ने इस पर सुलह की कि मुस्लमानों को टैक्स देंगे और मुस्लमान उनकी जानों और उनके अम्वाल और उनकी औलाद को अमान देंगे।

(फ़ुतूहुल बुल्दान लिल बुज़ारी पृष्ठ 174 अनुवादक अबुल ख़ैर मौदूदी, नफ़ीस अकैडमी लाहौर 1986 ई.)(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति, पृष्ठ 351 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई,)

फिर अजनादेन का युद्ध या अजनादीन है। दोनों लिखे हैं। इसके बारे में लिखा है कि फ़लस्तीन के नवाही इलाक़ों में से यह एक मारूफ़ बस्ती का नाम है।

(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 129 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बुसरा की फ़तह के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत शरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफियान रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ लेकर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद के लिए फ़लस्तीन की तरफ़ रवाना हुए। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त फ़लस्तीन के करीबी इलाक़ों में मुक़ीम थे। आप इस्लामी लश्करों से आकर मिलना चाहते थे परन्तु रूमी लश्कर उनके तआक़ुब में था और इस कोशिश में था कि उन्हें जंग पर मजबूर कर दे। रोमियों ने जब मुस्लमानों की आमद के विषय में सुना तो वह अजनादीन की तरफ़ हट गए। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब इस्लामी लश्करों के मुताल्लिक़ सुना तो वह वहां से चल पड़े यहां तक कि इस्लामी लश्करों से जा मिले और फिर सब अजनादीन के मुक़ाम पर जमा हो गए और रोमियों के सामने डट गए।

(उद्धरित तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 346 - 347 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)(उद्धरित ازالخلیفۃ الاول ابوبکر الصدیقؓ شخصیتہ وعصرہ للصلابی, पृष्ठ 312 दारुल मारूफ़)

दूसरी रिवायत यह भी है कि उसके मुताबिक़ अजनादीन जाने से क़बल हज़रत ख़ालिद बसरा के बजाय दमिशक़ का घेराव किए हुए थे और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो भी उनके हमराह थे। इस मुहासरे के दौरान हरक़्ल ने अहल-ए-दमिशक़ की मदद के लिए एक लश्कर भी भेजा था जिसके साथ मुस्लमानों की झड़प हुई थी जो बाद में दमिशक़ की फ़तह के ज़ेल में बयान हो जाएगी।

(उद्धरित हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 379-380 बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

बहरहाल दमिशक़ के घेराव के दौरान हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो को मालूम हुआ कि हिमस के हाकिम ने एक लश्कर इकट्ठा किया है ताकि हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो का रास्ता काटे जो कि इस वक़्त बसरा में थे और यह कि रोमियों का एक बड़ा लश्कर अजनादीन के मुक़ाम पर उतरा है। इस ख़बर ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो को परेशान कर दिया क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु इस वक़्त अहल दमिशक़ से जंग में व्यस्त थे। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपसी मश्वरा किया। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरी राय यह है कि हम यहां से चलें और हज़रत शरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो तक पहुंच जाएं इस से क़बल कि दुश्मन उन तक पहुंच जाए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अगर हम हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ गए तो अजनादीन में मौजूद रूमी लश्कर हमारा पीछा करेगा इसलिए मेरी राय यह है कि हम इसी बड़े लश्कर का क़सद करें जो कि अजनादीन में मौजूद है और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ पैग़ाम भेज दें और उन्हें दुश्मन की उनकी तरफ़ होने वाली हरकत से आगाह कर दें और उन्हें कहें कि वे अजनादीन में हमारे साथ आ मिलीं। इसी तरह हम हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफियान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को भी कहला भेजें कि वह हम से अजनादीन में आकर मिल जाएं फिर हम अपने दुश्मन से मुक़ाबला करें। इस पर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि यह राय बहुत उम्दा है अल्लाह इस में बरकत रखे। इस पर अमल करें।

एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को यह मश्वरा दिया था कि हमारा लश्कर शाम में अलग अलग मुक़ामात पर मुंतशिर है। लिहाज़ा इन तमाम को ख़त लिखा जाए कि वह हमें अजनादीन के मुक़ाम पर आकर मिलें इसलिए जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ से अजनादीन की तरफ़ जाने का इरादा किया तो समस्त उमरा को ख़त लिख कर अजनादीन में जमा होने का इरशाद फ़रमाया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो भी लोगों को लेकर दमिशक़ का मुहासरा छोड़ कर अजनादीन वालों की तरफ़ तेज़ी के साथ निकल पड़े। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो लश्कर के पिछले हिस्सा में थे। अहल-ए-दमिशक़ ने पीछा कर के हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो को जा लिया और उनका घेराऊ कर लिया। आप दो सौ आदमियों के साथ थे। दरअसल यह औरतों बच्चों और माल-ओ-अस्बाब पर मुश्तमिल क़ाफ़िला था। एक रिवायत के मुताबिक़ उनकी निगरानी और हिफ़ाज़त के लिए एक हज़ार सवार भी मौजूद थे। जबकि अहल-ए-दमिशक़ बहुत बड़ी संख्या में थे। बहरहाल हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे शदीद लड़ाई की। जब उसकी इत्तिला हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो तक पहुंची जो कि सवारों के साथ लश्कर के अगले हिस्सा में थे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु वापस लौटे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ दूसरे लोग भी लौटे। फिर सवारों ने रोमियों पर हमला कर दिया और उन्हें एक दूसरे पर गिराते हुए तीन मील तक पीछे धकेल दिया यहां तक कि वे वापिस दमिशक़ में दाख़िल हो गए। दूसरी तरफ़ अजनादीन में मुक़ीम रूमी फ़ौज ने अपने दूसरे लश्कर की जानिब ख़त रवाना किया और उन्हें भी अजनादीन आने की हिदायत की। रोमियों का यह लश्कर हज़रत शरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला की ग़रज़ से बसरा की तरफ़ जा रहा था इसलिए वह लश्कर भी अजनादीन आ गया। इसी तरह हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की हिदायत पर समस्त लश्कर भी इस्लामी अजनादीन में जमा हो गए।

(उद्धरित तारीख़ ख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 228 से 230 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)(मरदान अरब, पृष्ठ 216 से 214)

रूमी सिपहसालार ने मुस्लमानों को कुछ दे दिला कर वापस भेजना चाहा क्योंकि ईरानियों की तरह उसका भी यही ख़्याल था कि यह भूखे नंगे लोग हैं। अपने ग़रीब मुल्क से लूट मार के लिए निकले हैं। वे सदियों के असभ्य जाहिल मुफ़लिस और बे-सर-ओ-सामान सहरा नशीन अरबों से किसी आला उद्देश्य का तसव्वुर भी नहीं कर सकता था। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को एक पेशकश की कि अगर वे और उनकी फ़ौज वापस चले जाएं तो हर सिपाही को एक दस्तार एक जोड़ा कपड़ा और एक तिलाई दीनार दिया जाएगा। सिपहसालार को दस जोड़े कपड़े और एक सौ तिलाई दीनार और ख़लीफ़ा को एक सौ जोड़े कपड़े और एक हज़ार दीनार। तो यह उन्होंने कहा कि यह डाकू लुटेरे हैं। उनको इतना दो और रुख़स्त कर दो। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह सुना तो यह पेशकश बड़ी हक़ारत से ठुकरा दी और इंतेहाई सख़्त अलफ़ाज़ में कहा कि रोमियो हम तुम्हारी ख़ैरात को हक़ारत से ठुकराते हैं क्योंकि जल्द ही हम तुम्हारे माल-ओ-दौलत, तुम्हारे कुंबों और तुम्हारी ज़ातों के मालिक बन जाऐंगे।

(अशरा मुबशरा अज़ बशीर साजिद, पृष्ठ 156-157 बदर पब्लीकेशनज़ लाहौर)

जब दोनों लश्कर क़रीब हो गए तो रोमियों के एक सरदार ने एक अरबी शख़्स को बुला कर कहा कि तुम मुस्लमानों में दाख़िल हो जाओ। वह अरबी मुस्लमान नहीं था और उनमें एक दिन रात ठहरो। फिर मेरे पास उनकी ख़बरें लाओ। वह शख़्स लोगों में जा घुसा। अरबी शख़्स होने की वजह से किसी ने उसको अजनबी न समझा वह मुस्लमानों के दरमयान एक दिन और एक रात मुक़ीम रहा। फिर जब रूमी सरदार के पास वापस आया तो उसने पूछा क्या ख़बर लाए हो? उसने कहा ख़बर का पूछते हो तो फिर ख़बर यह है कि रात को ये इबादतगुज़ार हैं, रात की इबादत करने वाले हैं और दिन को शहसवार। अपने दरमयान इन्साफ़ को क़ायम रखने की ख़ातिर अगर उनके बादशाह का बेटा भी चोरी करे तो उसका हाथ काट देते हैं और अगर व्यभिचार करे तो उसको संगसार कर देते हैं।

रूमी सरदार ने उसे कहा कि अगर तुम मुझ से सच्च कह रहे हो तो सतह ज़मीन पर उनसे मुक़ाबला करने की निसबत ज़मीन के अंदर समा जाना बेहतर है। मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझ पर बस इतनी इनायत करे कि मुझे और उन्हें अपने हाल पर छोड़ दे न उनके ख़िलाफ़ मेरी मदद करे और न ही मेरे ख़िलाफ़ उनकी।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 347 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

तारीख़ तबरी में यह लिखा है।

बहरहाल सुबह के वक़्त लोग एक दूसरे के क़रीब हो गए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो निकले और लश्कर को तर्तीब दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों के दरमयान उन्हें जिहाद की तरग़ीब दिलाते हुए चलते जाते थे और एक जगह न रुकते थे और आपने मुस्लमानों की औरतों को हुक्म दिया कि वे मज़बूती से डटी रहें और लोगों के पीछे खड़ी हो जाएं। अल्लाह को पुकारें और उसी से फ़र्याद

करती रहें और जब कभी मुस्लमानों में से कोई आदमी उनके पास से गुज़रे तो वे अपने बच्चों को उनकी तरफ़ बुलंद करें और उनसे कहें कि अपनी औलाद और औरतों को बचाने के लिए जंग करो। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो हर दस्ते के पास ठहरते फ़रमाते : हे अल्लाह के बंदो अल्लाह का तक़्वा इख़्तेयार करो और अल्लाह के रास्ते में और उन लोगों से जंग करो जिन्हों ने अल्लाह का इंकार किया है और अपनी एड़ियों के बल फिर न जाना और तुम अपने दुश्मन से भयबीत न होना बल्कि शेरों की तरह पेशक़दमी करो यहां तक कि रोब छट जाए और तुम आज़ाद सम्मानित लोग हो। तुम्हें दुनिया भी दी गई है और आख़िरत का बदला भी तुम्हारे लिए अल्लाह के ज़िम्मा वाजिब क़रार दिया गया है। दुश्मन की कसरत जो तुम देख रहे हो तुम्हें ख़ौफ़ में मुबतला न करे। निसंदेह अल्लाह अपना अज़ाब और सज़ा नाज़िल करने वाला है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों से फ़रमाया कि जब मैं हमला करूँ तो तुम भी हमला कर देना।

(उद्धरित अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 230-231 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

इसके बाद दोनों लश्करों में शदीद लड़ाई हुई। हज़रत सईद बिन ज़ैद ने मुस्लमानों को इस तरह नसीहत करके जोश दिलाया कि हे लोगो अल्लाह के सामने अपनी मौत को याद रखो और जंग से भाग कर जहन्नुम के मुस्तहिक़ मत बनो। हे दीन की हिफ़ाज़त करने वालो और हे क़ुरआन की तिलावत करने वालो सब्र से काम लो, सब्र से जब जंग हुई और सख़्त जंग हुई तो रोमियों ने भाग कर जान बचाई। जब अपने मुक़ाम पर पहुंच गए तो वर्दान ने अपनी क़ौम के सामने तक़रीर की और कहा कि अगर यही हालत रही तो यह मुल्क-ओ-दौलत तुमसे चली जाएगी। बेहतर है कि अब भी अपने दिलों के ज़ंग को धो डालो। हमारे दिलों में ख़्याल तक नहीं गुज़रा था कि ये चरवाहे और ये भूके नंगे ग़ुलाम अरब हमसे लड़ेंगे। उनको अकाल और सूखे ने हमारी तरफ़ रवाना किया और अब उन्होंने यहां आकर फल खाए, मेवे खाए, जो की जगह गंदुम की रोटी मिल गई। सिरका की जगह शहद खा रहे हैं। इंजीर, अंगूर और उम्दा इश्याय से लुतफ़ उठा रहे हैं। फिर उसने कुछ सरदारों से राय तलब की तो एक सरदार ने यह मश्वरा दिया कि अगर मुस्लमानों को शिकस्त देना चाहते हो तो उनके अमीर को किसी हीले और बहाने से धोखे से बुला कर क़तल कर दो तो बाक़ी सब लोग भाग जाऐंगे।

तुम पहले क़ौम के दस सिपाहियों को भेजो कि वे घात लगा कर बैठ जाएं और फिर मुस्लमानों के अमीर को अकेले गुफ़्तगु और मुज़ाकरात के लिए बुलाओ। जब वह बातचीत की ग़रज़ से आए तो घात लगाए हुए सिपाही धावा बोल कर उसे क़तल कर दें।

इसलिए रोमियों के अमीर ने एक फ़सीह-ओ-बलीग़ शख़्स को हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेजा। क़ासिद जब मुस्लमानों के पास पहुंचा तो ज़ोर से आवाज़ दी कि अरब! क्या ख़ूँरेज़ी और इस क़तल पर बस नहीं करते हो। हमने सुलह की एक तजवीज़ सोची है। लिहाज़ा मुनासिब है कि तुम्हारा सरदार मुझ से गुफ़्तगु के लिए आगे आ जाए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो आ गे आए और उसे कहा कि तू जो पैग़ाम लाया है उसे बयान कर मगर सच्चाई को मद्द-ए-नज़र रखना। उसने कहा कि मैं इस उद्देश्य से हाज़िर हुआ हूँ कि हमारा अमीर ख़ूँरेज़ी को पसंद नहीं करता। अब तक जो लोग क़तल हुए हैं उनको इस पर ग़म है। इसलिए उनकी यह राय है कि तुम लोगों को कुछ माल देकर एक मुआहिदा करें ताकि जंग बंदी हो जाए। दौरान-ए-गुफ़्तगु अल्लाह तआला ने जो क़ासिद आया था उसके दिल में ऐसा रोब डाला कि उसने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से अपने अहल-ओ-अयाल की हिफ़ाज़त के बदले अपने सरदार का पूरा मन्सूबा हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने वर्णन कर दिया। सारा मन्सूबा जो उस को पता था कि किस तरह छुप कर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला करना है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अगर तुमने ग़द्दारी नहीं की तो मैं तुझे और तेरे अहल-ओ-अयाल को अमान देता हूँ। फिर वह वापस चला गया और अपने सरदार को जा कर बताया कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उनसे बातचीत के लिए तैयार हैं। वह बहुत ख़ुश हुआ और जो जगह बातचीत के लिए मुईन की गई थी वहां अपने दस सिपाहीयों को एक टीले के पीछे छुपा कर घात लगाने का हुक्म दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा कि उसने बता दिया था उसके मंसूबे को जान चुके थे। इसलिए आपने हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हो समेत दस मुस्लमानों को उस मुक़ाम की तरफ़ भेजा जहां दुश्मन घात लगाए हुए था। मुस्लमानों ने इस जगह पहुंच कर रूमी सिपाहियों को जा लिया और सबको क़तल कर के ख़ुद उनकी जगह बैठ गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो रोमियों के अमीर से बातचीत के लिए चले गए। दोनों तरफ़ की फ़ौजें बिल्कुल एक दूसरे के मुक़ाबिल पर तैयार खड़ी थीं। रूमी अमीर भी वहां पहुंच गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उससे गुफ़्तगु करते हुए फ़रमाया: अगर तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम हमारे भाई बन जाओगे वर्ना टैक्स दो या लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ।

रूमी अमीर को घात लगाए हुए सिपाहियों पर भरोसा था। इसलिए वे एक दम हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो पर तलवार से हमला-आवर हुआ और आपके दोनों बाज़ुओं को पकड़ लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी उस पर हमला किया। रूमी अमीर ने अपने आदमियों को आवाज़ दी कि जल्दी दौड़ो, मैं ने मुस्लमानों के अमीर को पकड़ लिया है। टीले के पीछे से सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह आवाज़ सुनी तो तलवारें सौंत कर उसकी तरफ़ लपके। वर्दान पहले तो यह समझा कि ये मेरे आदमी हैं मगर जब हज़रत ज़िरार रज़ियल्लाहु अन्हो पर नज़र पड़ी तो बदहवास हो गया उस के बाद हज़रत ज़िरार रज़ियल्लाहु अन्हो और दूसरे सिपाहीयों ने मिलकर उसका काम तमाम कर दिया। जब रोमियों को अपने अमीर की मौत की ख़बर हुई तो उनके हौसले पस्त हो गए।

(उद्धरित फ़ुतूहात-ए-शाम अज़ मौलाना फ़ज़ल मुहम्मद, पृष्ठ 97 से 104 मकतबा ईमान-ओ-यक़ीन 2011 ई.)

इसके बाद लोग एक दूसरे पर झपट पड़े और लड़ाई शुरू हो गई। रोमियों के एक और सरदार ने मुस्लमानों की लड़ाई का हाल देखा तो अपने लोगों से कहा कि मेरे सिर को कपड़े से बांध दो। उन्होंने उस से पूछा क्यों? उसने कहा कि आज का दिन बड़ा मनहूस है मैं इस को देखना नहीं चाहता। मैंने दुनिया में आज तक ऐसा सख़्त दिन नहीं देखा। रावी कहते हैं कि जब मुस्लमानों ने उसका सिर क़लम किया तो वह कपड़े में लिपटा हुआ था।

(तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 347 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

इस जंग में रोमियों की संख्या एक लाख के क़रीब थी। फ़ुतूहुल बुल्दान इन ईमाम अबील-हसन बलाज़री, पृष्ठ 74 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.) मुस्लमानों की संख्या तीस हज़ार। (الخليفة الاول ابوبكر الصديق شخصيته وعصره للدكتور علی محمد الصلابی, पृष्ठ 312 दारुल मारूफ़ बेरूत 2006 ई.) और एक रिवायत के मुताबिक़ पैंतीस हज़ार थी। (अशरा मुबशरा अज़ बशीर साजिद , पृष्ठ 805 अलबदर पुब्लिकेशन लाहौर 2000 ई.) इस जंग में तीन हज़ार रूमी मारे गए और उनका शिकस्त ख़ूर्दा लश्कर दीगर कई शहरों में पनाह लेने पर मजबूर हुआ। (तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 231 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

अजनादीन की फ़तह के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलेद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ख़त के ज़रीया यह ख़ुशख़बरी सुनाई। इस का मतन इस तरह है कि अस्सलामो अलैकुम। मैं आपको ख़बर दे रहा हूँ कि हमारी और मुशरेकीन की जंग हुई और उन्होंने हमारे मुक़ाबले में बड़े-बड़े लश्कर अजनादीन में जमा कर रखे थे। उन्होंने अपनी सलीबें बुलंद की हुई थीं और किताबें उठाई हुई थीं और उन्होंने अल्लाह की क़सम खा रखी थी कि वे फ़रार इख़्तेयार नहीं करेंगे यहां तक कि हमें फ़ना कर दें या हमें अपने शहरों से निकाल बाहर करें और हम भी अल्लाह पर पुख़्ता यक़ीन और उस पर तवक्कुल करते हुए निकले। फिर हमने किसी क़दर उन पर नेज़ों से वार किया फिर हमने तलवारें निकालें और उनके ज़रिया दुश्मन पर इतनी देर तक ज़रबें लगाईं जितनी देर में ऊंट को ज़िबह कर के तैयार किया जाता है।

फिर अल्लाह ने अपनी मदद नाज़िल की और अपना वादा पूरा कर दिया और काफ़िरों को शिकस्त दी और हमने उन्हें हर कुशादा रास्ते, हर घाटी और हर नशीबी जगह पर मौत के घाट उतारा। अपने दीन को ग़लबा अता करने और अपने दुश्मन को ज़लील करने और अपने दोस्तों से उम्दा सुलूक करने पर समस्त तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं। जब यह ख़त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पढ़ा गया तो उस वक़्त आप जीवन के अंतिम क्षण में मुबतला थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इस फ़तह ने ख़ुश कर दिया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अलहमदु लिल्लाह समस्त तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुस्लमानों की मदद की और इस से मेरी आँखों को ठंडा कर दिया।

(अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 231-232 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

अज की जंग के बारे में यह भी इबहाम है कि यह कब हुई? कुछ के नज़दीक तो यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में हुई थी। इस बारे में जो एक वज़ाहत है यह भी बयान कर देता हूँ। जैसा कि यह सवाल उठता है कि यह कब हुई? तो मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं। एक रिवायत के मुताबिक़ यह जंग तेराह हिज्री में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात से चौबीस दिन या बीस दिन या चौंतीस दिन पहले लड़ी गई।(तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 232 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009

ई.)(फ़ुतूहु बुल्दान ईमाम अबुल हसन बुल्ज़ारी, पृष्ठ 74 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

और बाअज़ इतिहासकारों के ज़माने में यह जंग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में पंद्रह हिज्री में लड़ी गई।

(अल् कामिल फिल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 266 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बहरहाल हमारे जो तहक़ीक़ करने वाले हैं उनकी जो तहक़ीक़ है और उनका यह ख़्याल है और यह ख़्याल सही लगता है कि ग़ालिब इमकान यही है कि अजनादीन के मुक़ाम पर दो मर्तबा जंग हुई हो। पहली बार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में और दूसरी बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में, क्योंकि बाअज़ कुतुब तारीख़ में दोनों मवाक़े पर इस्लामी अफ़्वाज अलग-अलग वर्णन हुई हैं। तेराह हिज्री में होने वाली जंग के सिपहसालार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो थे और पंद्रह हिज्री में होने वाली जंग के सिपहसालार हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु थे। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है, वल्लाहो आलम।

फ़तह दमिशक़ के बारे में तफ़सीलात हैं। वह इंशा अल्लाह आगे।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

संसार के किसी मुल्क, शहर में भी बस्ता है वह अपने शहर को साफ़ सुथरा देखे। जमाअत अहमदिया की यह एक विशेष इकाई का निशान है कि दुनिया में प्रत्येक जगह जब हम काम करते हैं यह नहीं कि किसी मुल्क में किसी किस्म का काम है और कहीं किसी किस्म का है बल्कि प्रत्येक जगह हम एक तरह काम करते हैं। और संसार में प्रत्येक जगह यह ख़िदमत-ए-ख़लक़ के काम हो रहे हैं। यदि सफ़ाई का काम है तो प्रत्येक जगह हो रहे हैं। इन्सानियत की सेवा के काम हैं तो वह भी प्रत्येक जगह हो रहे हैं। फिर एक बहुत बड़ी चीज़ है जो हम इन्सानों को एक दूसरे के क़रीब लाने के लिए करते हैं। संसार में बहुत सारे क़बायल हैं, बहुत सारी कौमें हैं बहुत सारे धर्मों हैं और ख़ुदा को न मानने वाले भी अब बहुत हो गए हैं। परन्तु इन सबको एक जगह जमा करना, एक जगह रखना, एक दूसरे के क़रीब लाना यह भी हमारा कर्तव्य है। इस लिए हम अंतरधार्मिक प्रोग्राम भी करते हैं ताकि प्रत्येक आए और अपने अपने धर्म के बारे में खूबियां वर्णन करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

पिछले दिनों हम ने लंदन में जमाअत अहमदिया बर्तानिया के सौ वर्ष पूरे होने पर वहां के एक बहुत पुराने और बड़े प्रसिद्ध गिल्ड हाल में एक फंक्शन किया था जिसमें विभिन्न धर्मों के लोगों को दावत दी। इसराईल से वहां रब्बानी भी आए, चर्च के प्रतिनिधि भी आए। कुछ पुराने धर्मों जो मिडल ईस्ट में हैं उनके प्रतिनिधि भी आए, और विभिन्न सियास्तदान भी वहां थे। मुझे भी वहां इस्लाम की शिक्षा वर्णन करने का अवसर मिला। प्रत्येक धर्म वाले ने अपने अपने धर्म की शिक्षा वर्णन की और बड़े सुन्दर माहौल में बड़े पुरसुकून माहौल में वह सारा फंक्शन हुआ। लगभग एक हज़ार के क़रीब ग़ैर मुस्लिम वहां उपस्थित थे और उन्होंने बड़े आराम से और प्यार से सारी बातें सुनी। जमाअत अहमदिया का यह आचरण तो प्रत्येक जगह है कि दुनिया में प्रत्येक जगह अंतरधार्मिक प्रोग्राम आयोजित करते हैं ताकि आपस में एक दूसरे को समझने के लिए अच्छा माहौल पैदा हो। धर्म प्रत्येक के दिल का मामला है। और क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि धर्म में कोई जबर नहीं। जब जबर नहीं तो किसी के विरुद्ध नफ़रत का हमें हक़ नहीं। मैं जिस चीज़ को बेहतर समझता हूँ मुझे वह इख़्तेयार करने का हक़ है आप में जो भी इस धर्म को बेहतर समझते हैं इसको इख़्तेयार करने का हक़ है। उसको वर्णन करने का हक़ है। अतः जब यह सोच हो जाए तो फिर इन्सान इन्सानियत की क़दरों की ओर ध्यान देता है न कि एक दूसरे को नुक़्सान पहुंचाने की ओर और इन्सानियत की क़द्रें यही हैं कि हम आपस में इन्सान होने के नाते भाई-भाई हैं। एक दूसरे के साथ हमारे अच्छे संबंध होने चाहिऐं। अब पड़ोसी सबसे क़रीबी सम्बन्ध वाला है। इस दृष्टि से मैं पड़ोसियों का भी शुक्रिया अदा करता हूँ कि यहां जो पहले सैंटर था और अब मस्जिद बनाई गई है यदि पड़ोसियों का सहयोग न होता तो यह मस्जिद की शक्ल अभी उसको नहीं दी जा सकती थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लाम के संस्थापक ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे पड़ोसी के हक़ के बारे में इसकदर ताकीद फ़रमाई कि मुझे ख्याल हुआ कि शायद पड़ोसी को विरासत का भी हक़दार क़रार दिया जाएगा। अतः हमारी नज़र में पड़ोसी का यह स्थान है कि इसके इतने हुक़ूक़ हैं जिस तरह अपने किसी अज़ीज़ के और क़रीबी के हुक़ूक़ होते हैं तो ईन हुक़ूक़ के रखते हुए और उन हुक़ूक़ को समझते हुए यह हो हि नहीं सकता कि हम किसी पड़ोसी के लिए तकलीफ़ का कारण बने हमारा काम है कि पड़ोसियों की तकलीफों को दूर करने वाले बनें मुझे बताया गया है तथा यहां एक वक्ता ने वर्णन किया कि हमारे सम्बन्ध में जिन लोगों को कोई ग़लतफ़हमी है वह हमारे विरुद्ध जलूस निकाल रहे हैं Protest कर रहे हैं चाहे मामूली सा ही हो कल परसों मुझे संदेश मिला कि हमारे कुछ हमदर्दों ने हमें भी कहा है कि हम आपके साथ हैं। अर्थात स्थानीय लोगों में से जो अहमदी मुस्लमान नहीं हैं ने हमें कहा कि हम आपके साथ हैं यदि आप उनके मुक़ाबले पर जलूस निकालना चाहें तो निकालें। तो हमारे नैशनल अमीर साहब ने उत्तर दिया कि हम इस क़िस्म का Protest नहीं करते। जब मुझे उन्होंने बताया तो मैंने कहा कि आप को यह उत्तर देना चाहिए था ठीक है हम आपके पर Protest करते हैं परन्तु हमारा Protest यह है कि जहां-जहां वह जलूस ले के जाते हैं या जहां हमारी मस्जिद है इस माहौल में वहां हम अपने नौजवान लड़कों को यह Banner देकर खड़ा करें कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं और यही हमारा उत्तर है और उनको समझाने के लिए यही हमारा एहतेजाज है जो समझते हैं कि इस्लाम शायद सख़्ती का धर्म है। सांप्रदायिकता का धर्म है अब यहां उनकी मस्जिद बन गई है। तो पता नहीं अब यहां क्या-क्या फ़साद पैदा होंगे। यह उत्तर जब हमारी ओर से जाएगा तो स्वयं उन्हें एहसास हो जाएगा कि उन्होंने हमें ग़लत समझा है। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने अपने एक शेअर में फ़रमाया है कि

गालियां सुन के दुआ दो पाके दुःख आराम दो
किबर की आदत जो देखो तुम दिखाओ इन्केसार

अतः यह हमारी शिक्षा है हमें गालियां भी कोई दे रहा है तो हम उस को दुआ देने वाले हैं। हमें कोई तकलीफ़ दे रहा है तो हम उस को आराम देने वाले हैं हमारे सामने कोई तकब्बुर और सख्ती से बोल रहा है तो हम आजेज़ी से इसके सामने अपने आपको प्रस्तुत करने वाले हैं। जैसा कि मैं ने कहा पहले भी यहां सैंटर था। अब मस्जिद का मीनार बन गया है। तो यह मुहब्बत का प्रकटन जिस का मैं ने वर्णन किया है। पहले से ज़्यादा बढ़कर यहां के अहमदी दिखाएँगे और आप लोग पड़ोसी उसको देखेंगे। और महसूस करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने फ़रमाया :

बहरहाल यह आप लोगों की हमदर्दी की भावनाएँ और ये एहसास कि हम यहां के रहने वाले स्थानीय लोग जायज़ बात के लिए अहमदियों के साथ हैं इस बात का प्रकटन है कि आपके उच्च आचरण हैं और इसके लिए मैं मेयर साहब का भी पड़ोसियों का भी, कौंसल का भी सबका शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने मीनार बनाने की आज्ञा दी जैसा कि मैंने पहले कहा है कि हमारा माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। इस का वर्णन हर जगह करना

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

चाहिए। और यही किसी एहतेजाज की सूरत में हमारा एहतेजाज का उत्तर है। फिर यह वर्णन हुआ कि 9/11 के बाद यहां यह मोटो लटकाया गया कि :

Love For All Hatred For None कि मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं यह मस्जिद के बाहर बैनर लगाया गया लिखा गया यह केवल दिखाने के लिए नहीं लिखा गया बल्कि यह अनुकरण है जिसकी प्रत्येक अहमदी से तवक़्क़ो की जाती है और प्रत्येक अहमदी को इस का प्रकटन करना चाहिए और यह मीनार बनने के बाद इस इमारत की मस्जिद की शक्ल बनने के बाद, इस का प्रकटन पहले से बढ़कर इन शा अल्लाह हमारी ओर से होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मस्जिद बनाने के जो उद्देश्य हैं जैसा कि मैंने पहले कहा कि अल्लाह तआला की इबादत और दूसरे इन्सानियत की सेवा है। अतः मस्जिद के अंदर यदि कोई मंसूबा बंदी हम करेंगे या हम अहमदी करते हैं तो वह यह मंसूबा बंदी होती है कि हम इन्सानियत की सेवा किस तरह करें, किस तरह दूसरों के हम काम आएं और उनकी तकलीफों को दूर करने वाले बनें। अतः प्रत्येक अहमदी यहां जो है वह इस प्रकटन के साथ आपसे सम्बन्ध रखता है। और प्रत्येक अहमदी जो संसार में बस्ता है इस प्रकटन के साथ अपने पड़ोसियों का हक़ अदा करने की प्रयास करता है कि उस की तकलीफ़ें प्रत्येक प्रकार से उस ने दूर करनी हैं। कुछ लोगों के दिलों में जैसा कि एहतेजाज हो रहा है, मीनार के बनने से कुछ आरक्षण पैदा हुए हैं। तो जैसा कि मैंने पहले कहा कि मीनार बनने के बाद हमारा मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं का नारा पहले से ज़्यादा बढ़ कर लगेगा। इस फ़साद के ज़माने में जब हम संसार पर नज़र करते हैं तो दुनिया में प्रत्येक जगह फ़साद फैला हुआ है। और बदअमनी की स्थितिहै। इन हालात में संसार में अमन क़ायम करने की आवश्यकता है अमन की सोच प्रत्येक इन्सान में पैदा करने की आवश्यकता है और इसके लिए सबसे बेहतरीन माध्यम यही है कि आपस में हम बैठें, मिलें जुलें, एक दूसरे को समझें और खुले दिल से एक दूसरे के विचारों सुनें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

Integration की यहां बात हो रही है। एक हमारे सम्मानीय वक्ता ने वर्णन किया है। Integration एक बड़ा मुश्किल मसला है, आहिस्ता-आहिस्ता हल होगा। परन्तु जो व्याख्या मेरे निकट Integration की है, मुझे तो इस में कोई मुश्किल और बड़ा मसला नज़र नहीं आता। मैं यह समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो दूसरे मुल्क में जाकर आबाद होता है, उसका कर्तव्य बन जाता है कि उस मुल्क से मुहब्बत करे, उसके विरुद्ध किसी किस्म के भावनाए उसके दिल में नहीं होने चाहिऐं। वहां के स्थानीय लोगों के साथ मिल-जुल कर रहे और न केवल मिल-जुल कर रहे बल्कि उनकी बेहतरी के लिए जो कुछ उससे बन पड़ता है जो कुछ वह कर सकता है वह करे। फिर शहर की प्रगति के लिए देश की प्रगति के लिए अपनी सलाहियतें जितना Potential है इस को बरू-ए-कार लाए और प्रयोग करे। यदि इस सोच के साथ बाहर से आने वाले स्थानीय लोगों के साथ मिल-जुल कर रहें, देश की प्रगति के लिए काम करें, शहर की प्रगति के लिए काम करें लोगों की भलाई और बेहतरी के लिए काम करें, अमन और मुहब्बत और प्यार पैदा करने के लिए काम करें, तो इस से बढ़कर Integration और क्या हो सकती है और यही इन्सानों के आपस में रहने का उद्देश्य है। अतः ये कोई ऐसा मसला नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जैसा कि मैंने पहले कहा और वक्ताओं ने वर्णन भी वर्णन किया कि धर्म प्रत्येक के दिल का मामले है परन्तु इन्सानियत की जो क़द्रें हैं इस को हर धर्म वाले को पहचानने की आवश्यकता है और क़त-ए-नज़र इसके कि कौन किस धर्म से सम्बन्ध रखता है हमें इन्सानी क़दरों का ख्याल रखना चाहिए। और यह चीज़ यदि पैदा हो जाए तो संसार में अमन और मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा क़ायम हो सकती है। अतः इस बात की ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अभी एक वर्णन हमारे आख़िरी वक्ता ने यह किया कि पाकिस्तान में हमारी बड़ा विरोध है हमारी संख्या इसके अतिरिक्त वहां बहुत ज़्यादा होने के विरोध है। शहीद भी किए जाते हैं, तकलीफ़ें भी दी जाती हैं। जेलों में भी डाला जाता है परन्तु हमने कभी इन चीज़ों के विरुद्ध न विरोध करने वालों को उत्तर दिया और न एहतेजाज किया। हाँ क़ानूनी कार्यवाही जिस हद तक हम कर सकते हैं। अब गुज़शता दिनों ही हमारे एक प्रसिद्ध डाक्टर जो अमरीका में रहते थे, हार्ट स्पैशलिस्ट, सेवा के जज़बे के तहत पाकिस्तान गए, रब्वाह जो छोटा सा शहर है और इस में अहमदियों की संख्या बहुत ज़्यादा है। वहां हमारा बड़ा अच्छा हस्पताल है, वहां सेवा के जज़बे के तहत गए और इस हस्पताल में भी ईलाज के लिए 80 प्रतिशत लोग उन लोगों में से आते हैं जो अहमदी मुस्लमान नहीं हैं तो यह प्रसिद्ध डाक्टर वहां अमरीका के हार्ट स्पैशलिस्ट इस सेवा के जज़बे के तहत वहां गए, परन्तु अगले दिन ही उनको वहां किसी बद फ़ितरत ने गोली मारकर शहीद कर दिया। उनका जनाज़ा कैनेडा गया और कैनेडा की हुकूमत ने और अमरीका की हुकूमत ने उनको बड़ा सम्मान दिया। दोनों हुकूमतों ने कैनेडा और अमरीका के परचमों में लपेट कर उनके ताबूत को दफ़नाया गया। तो यह सम्मान और यह स्थान था इस डाक्टर का, कई ऐवार्ड उन्होंने लिए हुए थे, परन्तु एक सेवा की भवना थी जिस के तहत इतने ऐवार्ड लेने के बाद उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं बड़े हस्पतालों में काम करूंगा बल्कि इन्सानियत की सेवा के लिए छोटी सी जगह पर गए और शहीद हो गए, परन्तु हमने वहां कोई Protest नहीं किया, हमने कोई जलूस नहीं निकाला, और न हमारी यह भवना कम हुई कि हम आइन्दा उन लोगों की सेवा नहीं करेंगे उन लोगों की सेवा हम अब भी कर रहे हैं और आइन्दा भी करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जमाअती ख़िदमात के हवाला से यहां एक वक्ता ने केवल सैरालियून की बात की है परन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों में और संसार के विभिन्न देशों में हमारे स्कूल भी हैं हस्पताल भी हैं और इन्सानियत की सेवा हम कर रहे हैं। अतः जहां-जहां अहमदी हैं और जहां मस्जिद बनाते हैं, तो साथ यह प्रयास होती है कि इन्सानियत की सेवा के काम को मज़ीद बड़ा किया जाए। और यही कारण है कि अफ़्रीक़ा में जो हमारी मस्जिदें ज़्यादा बनती जा रही हैं तो वहां हमारे हस्पताल और हमारे स्कूल भी सेवा के जज़बे के तहत काम कर रहे हैं। अतः यह हमारी भावना है जो इन्सानियत की सेवा का हमारे अंदर उपस्थित है। मस्जिद के हवाले से मैं पुनः कहूँगा कि मस्जिद के बनने से कुछ लोगों में आरक्षण होते हैं, यदि कोई ग़लतफ़हमी है तो उसको दूर करना है यह हमारी मस्जिद पहले से बढ़कर जहां स्थानीय लोगों के लिए इबादत की जगह प्रदान करके उनको ख़ुदा तआला के हुज़ूर झुका ने वाला बनाएगी और बनाना चाहिए और प्रत्येक अहमदी को भी यह बात याद रखनी चाहिए वहां इन्सानियत की सेवा की भवना पहले से बढ़कर हमसे प्रकट होगी और इन शा अल्लाह तआला पहले से बढ़कर बेहतर मंसूबे हम यहां के स्थानीय लोगों की सेवा के लिए भी बनाएंगे। जज़ाकमुल्ला। शुक्रिया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण सात बज कर पाँच मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई

(शेष आगे) .....

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 17-24 जुलाई 2014 ई.)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

* ग़ैर अहमदी मुस्लमान आरोप लगाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद लिखा है कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। क्या सब अहमदियों ने ये कुतुब तीन दफ़ा पढ़ी हैं?

* ख़ुतबा जुमा के आख़िर पर इमाम नीचे बैठता है और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया पढ़ता है, वो ऐसा क्यों करता है?

* एक जमाअती ओहदेदार की अहमदी लड़कियों को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम मर्दों से शादी की इजाज़त मिलने पर फ़िक्रमंदी और परेशानी के इज़हार पर हुज़ूर अनवर की हिदायत और राह-नुमाई

* कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं?

* हुज़ूर इतने सारे काम इकट्ठे किस तरह कर लेते हैं?

* हुज़ूर अपने ख़ुतबात जुमा की तैयारी किस तरह करते हैं?

* क्या अल्लाह तआला पहले से जानता है कि हम जन्नत में जाऐंगे या दोज़ख़ में, और अगर वह जानता है तो फिर हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है?

* कोरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-22)

प्रश्न : एक महिला ने अपनी बच्ची की जन्म से पूर्व वफ़ात पर कुछ सवालात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में जानने के उद्देश्य से तहरीर किए। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 20 फ़रवरी 2020 में इन सवालात के निमंलिखित जवाबात इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो बच्ची पैदाइश से पहले फ़ौत हो गई है इस की तस्वीर घर में लगा कर अपने आपको मज़ीद तकलीफ़ देने वाली बात है। और वैसे भी चूँकि वह बच्ची पैदा होने से पहले फ़ौत हो गई थी इसलिए हो सकता है कि उसकी तस्वीर इतनी साफ़ न हो और दूसरे बच्चों को ख़ौफ़ज़दा करने का बायस हो। इसलिए इस बच्ची की तस्वीर घर में लगाने और अपने पास रखने की ज़रूरत नहीं।

पैदाइश से पहले फ़ौत होने वाले बच्चों को उमूमन न ग़ुसल दिया जाता है और न उनका जनाज़ा होता है लेकिन अगर कोई माता पिता अपनी दिल की संतुष्टि के लिए ऐसा कर लें तो इस में हर्ज भी कोई नहीं।

जहां तक रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने की बात है तो अगर आप बच्ची की क़ब्र पर जा कर सब्र कर सकती हैं और आपके रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने में आप और बाक़ी घर वालों को कोई तकलीफ़ नहीं होती तो कुछ दिन रोज़ाना क़ब्रिस्तान जा कर दुआ करने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन अगर वहां जाने से आपकी तबीयत पर बुरा असर पड़ता हो और सब्र का दामन हाथ से छूटता हो तो फिर रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने की बजाय घर में ही रह कर दुआ करें। और याद रखें कि ये बच्ची दरअसल आपके पास अल्लाह तआला की एक अमानत थी जो उसने आपको इतने ही वक़्त के लिए अता फ़रमाई थी और जब यह वक़्त ख़त्म हुआ तो उसने अपनी अमानत वापस ले ली। इसलिए उसे अल्लाह तआला की रज़ा समझ कर आपको इस पर सब्र करना चाहिए।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि ग़ैर अहमदी मुस्लमान जिन में मेरे ख़ानदान वाले भी शामिल हैं आरोप लगाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद लिखा है कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। और फिर वे पूछते हैं कि क्या सब अहमदियों ने ये कुतुब तीन दफ़ा पढ़ी हैं? इस का क्या जवाब दिया जाए? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 20 फ़रवरी 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहीं यह नहीं लिखा कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। बल्कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया है कि "और वे जो ख़ुदा के मामूर और मुर्सल की बातों को ग़ौर से नहीं सुनता और उसकी तहरीरों को ग़ौर से नहीं पढ़ता उसने भी तकब्बुर से एक हिस्सा लिया है। सो कोशिश करो कि कोई हिस्सा तकब्बुर का तुम में न हो ताकि हलाक न हो जाओ औरता तुम अपने अहल-ओ-अयाल समेत निजात पाओ।"

(नुज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 403)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इस इरशाद का मतलब है कि जिन लोगों की दुनियावी कुतुब और उलूम की तरफ़ तवज्जा रहती है और दीनी कुतुब और उलूम की तरफ़ तवज्जा नहीं करते उनमें एक तरह का तकब्बुर पाया जाता है क्योंकि वे दुनियावी उलूम को ही काफ़ी समझते हैं हालाँकि इन्सान की नजात के लिए दीनी उलूम का हासिल करना निहायत ज़रूरी है। और दीनी इलम दीनी कुतुब के पढ़ने से ही हासिल होता है।

एक जगह हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी तसनीफ़ हकीकतुल वह्यी के बारे में ताकीद करते हुए फ़रमाया : "हमारे दोस्तों को चाहिए कि ह हकीकतुल वह्यी को अव्वल से आख़िर तक बग़ौर पढ़ीं बल्कि इसको याद कर लें। कोई मौलवी उनके सामने नहीं ठहर सकेगा क्योंकि हर किस्म के ज़रूरी उमूर का इस में वर्णन किया गया है और एतराज़ों के जवाब दीए गए हैं।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 235 ऐडीशन 1988 ई.)

पस अगर यह बात दरुस्त होता कि जो शख़्स हुज़ूर अलैहिस्सलाम की समस्त कुतुब को तीन तीन मर्तबा नहीं पढ़ता उसे दावा की समझ नहीं आ सकती तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम हकीकतुल वह्यी के बारे में एक दफ़ा ग़ौर से पढ़ने की ताकीद न फ़रमाते बल्कि फ़रमाते कि उसे भी बाक़ी कुतुब की तरह तीन तीन दफ़ा पढ़ें।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ख़ुद ऐसा कहीं नहीं तहरीर फ़रमाया जबकि सीरतुल महदी में एक रिवायत है कि "हज़रत साहिब फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स हमारी किताबों को कम-अज़-कम तीन दफ़ा नहीं पढ़ता उस में एक किस्म का कबर पाया जाता है।"

(सीरतुल महदी भाग प्रथम पृष्ठ 365 रिवायत नंबर 410)

और इस रिवायत का भी वही मतलब है जो ऊपर मैंने वर्णन कर दिया है कि दीनी कुतुब को छोड़ कर सिर्फ दुनयावी कुतुब पढ़ना और दीनी उलूम को छोड़कर सिर्फ दुनयावी उलूम हासिल करना इन्सान में कबर के पाए जाने की अक्कासी करता है। अतः हर अहमदी को ज़्यादा से ज़्यादा उन रुहानी ख़ज़ायन से लाभ प्राप्त करना चाहिए।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़त किया कि ख़ुतबा जुमा के आख़िर पर इमाम नीचे बैठता है और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया पढ़ता है, वह ऐसा क्यों करता है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 23 फ़रवरी 2020 में इस मसला के बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : यह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। इस्लिएय कुतुब

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 29 September 2022 Issue No. 39

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

अहादीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाने का यह तरीक़ वर्णन हुआ है कि आप पहले खड़े हो कर ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया करते थे और जब वाज़-ओ-नसीहत इत्यादि से फ़ारिग़ होते तो कुछ क्षणों के लिए ख़ामोशी से नीचे बैठ जाते और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया इरशाद फ़रमाते। इस की वजह जैसा कि कुछ उल्मा ने लिखा है शायद यह है कि इस के ज़रीया दोनों ख़ुत्बों में अंतर वाज़िह किया जा सके।

लेकिन इसके साथ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अगर कोई इमाम किसी तकलीफ़ की वजह से बैठ ने सके तो वह पहला ख़ुतबा देकर चंद लम्हे ख़ामोशी से खड़े रह कर ख़ुतबा सानिया पढ़ सकता है। जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला किया करते थे, जब आप घोड़े से गिरने की वजह से नीचे बैठ नहीं सकते थे। उस वक़्त आप पहला ख़ुतबा इरशाद फ़रमाने के बाद कुछ क्षणों के लिए ख़ामोशी से खड़े रहते और फिर ख़ुतबा सानिया पढ़ा करते थे। इसी तरह जब मेरा पित्ते का ऑप्रेशन हुआ था तो उस के बाद जो पहला जुमा आया था उस के ख़ुत्बे के दौरान मैंने भी यही तरीक़ इख़्तेयार किया था कि चंद लम्हे ख़ामोशी से खड़े रह कर ख़ुतबा सानिया पढ़ा।

प्रश्न : एक जमाअती ओहदेदार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहुताला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अहमदी लड़कियों को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम मर्दों से शादी की इजाज़त मिलने पर फ़िक्रमंदी और परेशानी का इज़हार करके इस बारे में राहनुमाई चाही? जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 29 फ़रवरी 2020 में इस बारे में निमंलिखित हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम के बाअज़ अहकामात इंतेज़ामी नौईयत के हैं जिनमें ख़ुदा तआला ने मुस्लमानो तो उनमें किसी किस्म की तबदीली का इख़्तेयार नहीं दिया लेकिन अपने नबी और इस की नियाबत में खलि़फ़ा को उनमें तबदीली करने और हालात के मुताबिक़ फ़ैसला करने का इख़्तेयार दिया है।

मेरे नज़दीक मुस्लमान मर्द और औरत का ग़ैर मुस्लिमों के साथ निकाह का मुआमला भी इसी किस्म के इंतेज़ामी मुआमलात में से है। अतः अहमदी मर्द हो या औरत उसका किसी ग़ैर अहमदी या ग़ैर मुस्लिम से निकाह की इजाज़त का मामला ख़लीफ़-ए-वक़्त की सवाबदीद पर है, किसी और के पास उसका इख़्तेयार नहीं। ख़लीफ़-ए-वक़्त हर केस में हालात के मुताबिक़ फैसला करता है। लिहाज़ा जब मेरे से इजाज़त के लिए राबता किया जाता है तो आपका काम है कि आप अपनी राय के साथ मुझे रिपोर्ट भिजवाएं। आप लोगों का इस से ज़्यादा काम नहीं है।

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के सोच में भी हज़रत-ए-ईसा अलैहिस-सलाम की ज़िंदगी होती तो ज़रूर बोल उठते, परन्तु सब ख़ामोश हो गए और बाज़ारों में यह आयत पढ़ते थे और कहते थे कि गोया यह आयत आज उत्तरी है।

अल्लाह की शरण चाहते हैं सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो मुनाफ़िक़ नहीं थे जो वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रोब में आकर ख़ामोश हो रहे और हज़रत अबू बकर का खंडन न किया। नहीं, असल बात यही थी जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान की। इस लिए सबने गर्दन झुका ली। यह है इजमा सहाबा का। हज़रत अमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी तो यही कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर आएँगे। अगर ये इस्तिदलाल कामिल न होता (और कामिल तब ही होता कि किसी किस्म का इस्तिस्ना नहीं होता क्योंकि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा आसमान पर चले गए थे और उन्होंने फिर आना था तो फिर यह इस्तिदलाल क्या यह तो एक उपहास होता) तो ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ही खंडन करते हैं।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 397 प्रकाशन, क़ादियान 2018)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अनहा की एक बकरी मर गई। चंद आदमी उसको उठा कर बाहर लिए जा रहे थे। नबी करीम सलाम ने उनसे फ़रमाया कि तुम उस का चमड़ा क्यों नहीं उतार लेते? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ये तो मेयता है । आपने फ़रमाया क्या तुमने उसे खाना है।

अतः मालूम हुआ कि जिसका गोश्त हराम हो उस के चमड़े के प्रयोग में कोई हर्ज नहीं। हाँ सिर के बालों के बने हुए ब्रुशों को मकरूह कहा जाएगा क्योंकि उनको मुँह में डाला जाता है जो खाने का दरवाज़ा है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 260 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad